AD EDUXIAN JOURNAL
A Quarterly Multidisciplinary Blind Peer Reviewed & Refereed Online International Journal
Google Scholar Indexing PIF: 1.048(I2OR), 3.125 (IIFS) & 3.8(SJIF)
Vol (3), Issue (3), July-September 2026 ISSN: 3048-7951

संस्थागत समाचार मीडिया का एल्गोरिदम आधारित वैकल्पिक मीडिया के दौर में महत्वः बहुआयामी लोकतंत्र के दृष्टिकोण से एक अध्ययन

डॉ. अमरदीप[1] & डॉ. प्रदीप कुमार[2]

DOI : http://doi.org/10.5281/zenodo.22037070
Review: 11/07/2026 Acceptance: 13/07/2026 Publication: 21/08/2026

सारांशः बहुआयामी समाज में सूचनाओं का महत्व हमेशा से रहा है। सूचनाओं के कई आयाम और प्रकार होते हैं जो समाज के अलग अलग वर्गों के लिए कार्य करते हैं। सूचनाएँ कैसे बनती हैं और वो कितनी सत्य है इसको लेकर हमेशा से ही मतभेद रहा है। यूवल नोअ हरारी ने अपनी किताब (नेक्सस) में सूचनाओं के इतिहास और उसके बदलते आयामों पर चर्चा की है। उनके अनुसार कोई डाटा तब सूचना कहलाती है जब लोग उसका उपयोग सत्य को जानने या खोजने के लिए करते हैं। यह दृष्टिकोण सूचना की अवधारणा को सत्य की अवधारणा से जोड़ता है और यह मानता है कि सूचना की मुख्य भूमिका वास्तविकता का प्रतिनिधित्व करना है। सत्य वास्तविकता का पूर्णतः प्रतिनिधित्व नहीं होता। बल्कि सत्य वह होता है जो हमारी ध्यान दृष्टि को वास्तविकता के कुछ पहलुओं की ओर आकर्षित करता है। वास्तविकता का कोई भी विवरण सौ प्रतिशत सटीक नहीं होता, लेकिन इसके बावजूद कुछ विवरण दूसरों की तुलना में अधिक सत्य के निकट होते हैं। सस्थांगत न्यूज मीडिया ने बीते आठ–दस दशकों में एक ऐसी व्यवस्था का निर्माण किया है जिसमें घटनाओं, कार्यक्रमों और प्रंसगों के बारे में जानकारियां इकट्ठा करना, उनका सत्यापन और उनका प्रस्तुतीकरण लोकतांत्रिक देशों में सूचनाओं का एक ईकोसिस्टम तैयार हुआ। संस्थागत न्यूज मीडिया ने सूचना को समाजिक हित की अवधारणा से जोड़ा, निष्पक्ष सूचनाओं को सुनिश्चित करने के लिए बहु–स्तरीय जाँच और अवधारणा से जोड़ा, निष्पक्ष, गुणवत्ता और विविधता को सुनिश्चित किया। संस्थागत न्यूज मीडिया पर बहुत सारे दबाव भी थे जिस वजह से इसकी प्रामाणिकता पर सवाल उठते रहे हैं। आज जब वैकल्पिक मीडिया या कहें इंटरनेट आधारित मीडिया पूरी तरह से अपना स्थान बना चुका है और सूचनाओं का संग्रहण और निर्माण और उसका प्रसारण करना बेहद आसान हो गया है तब यह शोधपत्र दोबारा से इस बात की जाँच करता है कि लोकतांत्रिक समाज में सूचनाएँ जो कि व्यक्ति के अधिकारों, उसकी जीविका, उसके सरकार से संबंध और उसके नागरिक होने के विचार से संबंधित हैं और जिसके लिए एक सामान्य समझ समाज के बीच बनना जरूरी है, उन परिस्थितियों में एल्गोरिदम आधारित टैकनोलजी जो लोगों को आभासी समुदायों में उलझाकर भिन्न सूचनाएँ और मत उन तक नहीं आने दे रही है, वहाँ नागरिकों के बीच एक सामान्य समझ और सर्वसम्मति कैसे बनेगी? संस्थागत समाचार मीडिया और एल्गोरिदम आधारित वैकल्पिक मीडिया दोनों के अपने अपने गुण दोष हैं, लेकिन इस शोधपत्र में सेकेंडरी आँकड़ों के आधार पर इस बात का विश्लेषण किया गया है कि लोकतंत्र में सूचना और उसके आधार पर समाचार बनाने और उसको प्रस्तुत करने की जो प्रक्रिया जरूरी हैं, ताकि नागरिक अपनी एक समझ बना सके व लोकतांत्रिक निर्णय–निर्माण में भाग ले सकें, उसमें इन दोनों मीडिया में से कौनसा ज्यादा प्रभावी है।

की–वर्ड्स : एल्गोरिदम, वैकल्पिक मीडिया, मीडिया प्रभावों का चतुर्भुज, लोकतंत्र, संस्थागत समाचार मीडिया

भूमिका :

सूचनाएँ कई प्रकार की होती हैं। एक लोकतांत्रिक देश में विभिन्न सामाजिक समूह होते है जिनकी अलग–अलग जरूरतें हैं और उन जरूरतों को पूरा करने के लिए सबसे अहम् है कि उनके पास निष्पक्ष और प्रामाणिक सूचनाएँ हों। मानव का विकास उसके पास उपलब्ध सूचना के तंत्र पर निर्भर करता है। सूचनाएँ हमेशा वास्तविकता का प्रतिनिधित्व नहीं कर पाती, लेकिन सूचनाँए लोगों को जोड़ती हैं। उनमें एक समझ पैदा करती हैं और उन विषयों पर सर्वसम्मति बनाने में सहायता

[1] सहायक प्रोफेसर, जनसंचार विभाग, गवर्नमेंट कॉलेज फॉर गर्ल्स, गुहला–चीका, कैथल
[2] सहायक प्रोफेसर, जनसंचार विभाग, गवर्नमेंट कॉलेज फॉर गर्ल्स, गुहला–चीका, कैथल

करती हैं जिन पर लोगों के अलग अलग मत हैं। लोकतंत्र एक सामूहिक निर्णय–निर्माण की प्रक्रिया है और इसमें सूचना और संचार की तकनीकों की अहम् भूमिका है।

संस्थागत न्यूज मीडिया ने बीते आठ–दस दशकों में एक ऐसी व्यवस्था का निर्माण किया जिसमें घटनाओं, कार्यक्रमों और प्रसंगों के बारे में जानकारियाँ इक्ट्ठा करना, उनका सत्यापन और उनका प्रस्तुतीकरण करके लोकतांत्रिक देशों में सूचनाओं का एक ईकोसिस्टम तैयार हुआ। संस्थागत न्यूज मीडिया ने सूचना को सामाजिक हित की अवधारणा से जोड़ा, निष्पक्ष सूचनाओं को सुनिश्चित करने के लिए बहु–स्तरीय जाँच और संतुलन की व्यवस्था विकसित की है, सूचनाओं की निष्पक्षता, गुणवत्ता और विविधता को सुनिश्चित किया। आत्म–संशोधन तंत्र निर्माण किया ताकि उनकी स्वतन्त्रता पर कोई सवाल न उठा सकें। संस्थागत समाचार मीडिया पर हमेशा से राजनीतिक और आर्थिक दबावों का खतरा रहा है और इन दबावों के कारण संस्थागत समाचार मीडिया ने अपनी साख को खोया भी है। समाचारों का चयन, विविधता और व्यापक प्रतिनिधित्व को लेकर भी संस्थागत समाचार मीडिया निशाने पर रहा है। वैकल्पिक सूचना तंत्र की जो परिकल्पना मीडिया विमर्श में की जाती थी, पिछले दशक में वह पूर्णतया साकार हो गई। एल्गोरिदम आधारित वैकल्पिक मीडिया की पहुँच और उसके उपयोग ने मानव इतिहास में मीडिया प्रयोग के सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए हैं। इनकी पहुँच और प्रयोग अभूतपूर्व हैं। एल्गोरिदम आधारित वैकल्पिक मीडिया के कारण अब सूचना का सम्प्रेषण किसी संस्था का मोहताज नहीं रहा है।

विविधता और प्रतिनिधित्व के मुद्दे अब मुद्दे नहीं रहे हैं। हर व्यक्ति अब विभिन्न सोशल मीडिया ऐप्लिकेशन का प्रयोग कर अपनी समस्या या विचार को सम्प्रेषित कर सकता है। संस्थागत समाचार मीडिया पर भी इन वैकल्पिक मीडिया का प्रभाव दिख रहा है। संस्थागत समाचार मीडिया अपने आर्थिक हितों को बचाने के लिए वैकल्पिक मीडिया को भी अपने साथ समायोजित कर रहा है। इस पहलू के साथ ही एक नया पहलू भी अब नजर आने लगा है जिसमें एल्गोरिदम आधारित वैकल्पिक मीडिया लोगों को उनके मतों से भिन्न सूचनाओं को उन तक नहीं आने दे रहा है। इसके साथ ही भ्रामक सूचनाएँ और दुष्प्रचार को लेकर भी एल्गोरिदम आधारित वैकल्पिक मीडिया के पास कोई ठोस नियामक प्रणाली नहीं है।

हम लाखों सालों के विकास का नतीजा हैं। हमारे अंदर कुछ आदतें और स्वभाव ऐसे हैं, जो हमारे पूर्वजों को छोटे समूहों में रहकर शिकार करने और जिंदा रहने में मदद करते थे। हमारा दिमाग कई बार बिना ज्यादा सोचे जल्दी फैसला कर लेता है, क्योंकि पहले ऐसा करना खतरे से बचने के लिए जरूरी होता था। हमें गपशप और रोचक कहानियाँ पसंद आती हैं, क्योंकि पुराने समय में यही जानकारी और खबरों का मुख्य साधन थीं। हमें मीठा और चर्बी वाला खाना अच्छा लगता है, क्योंकि जब खाना कम मिलता था तब ये ऊर्जा के महत्वपूर्ण स्रोत होते थे।

चीनी और वसा के प्रति हमारी स्वाभाविक लालसा आज के समय में मोटापे को विश्व की सबसे गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं में बदल रही है।

इसी प्रकार, हमारा तेजी से निष्कर्ष निकालने वाला मस्तिष्क और नाटकीय विषयों के प्रति आकर्षण सोशल मीडिया का सहारा लेकर समाज में गलत धारणाओं को जन्म दे रहा है तथा वास्तविकता को आवश्यकता से अधिक नाटकीय रूप में प्रस्तुत करने वाली विश्व–दृष्टि को बढ़ावा दे रहा है। एल्गोरिदम आधारित वैकल्पिक मीडिया लोगों को मतभेदों से जुड़ने के बजाय समान विचारधारा वाले लोगों के आभासी समुदायों में समायोजित कर रहा है।

पॉडकास्ट के जरिए लम्बे लम्बे इंटरव्यूज, रील्स के जरिए सूचनाएँ, न्यूज–इन्फ्लुएंसर और यू ट्यूब पत्रकारिता ने आज सूचना के तंत्र पर लगभग कब्जा कर लिया है। लेकिन यहाँ यह जानना महत्वपूर्ण है कि पत्रकारिता के जो आदर्श और निष्पक्ष सूचनाओं को सुनिश्चित करने के लिए बहु–स्तरीय जाँच (गेटकीपिगं) और संतुलन की व्यवस्था विकसित हुई थी, एल्गोरिदम आधारित वैकल्पिक मीडिया में इनका अभाव दिखायी देता है। एल्गोरिदम संचालित वैकल्पिक मीडिया की प्रकृति ऐसी है कि यह सूचना के एक पक्ष को एक खास आभासी समुदाय में पहुँचने देता है जबकि सूचना के दूसरे पक्ष को दूसरे आभासी समुदाय में।

यह शोधपत्र दोबारा से इस बात की जाँच करता है कि लोकतांत्रिक समाज में सूचनाएँ, खासतौर पर ऐसी सूचनाएँ जो कि व्यक्ति के अधिकारों, उसकी जीविका, उसके सरकार से संबंध और उसके नागरिक होने के विचार से संबंधित हैं और जिसके लिए एक सामान्य समझ समाज के बीच बनना जरूरी है, उन परिस्थितियों में एल्गोरिदम् आधारित टैकनोलजी जो लोगों को आभासी समुदायों में उलझाकर भिन्न सूचनाएं और मत उन तक नहीं आने दे रही है, वहाँ नागरिकों के बीच एक सामान्य समझ और सर्वसम्मति कैसे बनेगी? इसके साथ ही सूचना को एकत्रित करके उसकी सभी पहलुओं से जाँच करके उसे समाचार के रूप में प्रस्तुत करने की जो प्रक्रिया संस्थागत मीडिया ने विकसित की जिसमें गेटकीपिंग के द्वारा यह भी सुनिश्चित किया जाता है कि प्रासंगिक सूचनाएं ही एकत्रित की जाएं और उनका ही प्रसारण हो सके ताकि नागरिकों को शिक्षित, जागरूक, और उन्हें लोकतंत्र में नागरिक की भूमिका निभाने के लिए तैयार किया जा सके। क्या एल्गोरिदम आधारित वैकल्पिक मीडिया ऐसी जिम्मेदारी निभा रहा है?

वर्तमान समय में हालांकि दोनों ही प्रकार के मीडिया में अनेक समस्याएँ हैं, लेकिन इस शोधपत्र में इस बात को लेकर विश्लेषण किया गया है कि बहुआयामी लोकतंत्र में नागरिक का दायित्व निभाने के लिए उसके नागरिकों के पास जो सूचनाएँ होनी चाहिए, जो प्रतिनिधित्व उन्हें मिलना चाहिए, जो आम सहमति देशहित के मुद्दों पर बननी चाहिए, जो निष्पक्ष और प्रामाणिक सूचनाएँ उन्हें मिलनी चाहिए, और जो सार्वजनिक मंच विभिन्न मतभेदों व विचारधाराओं को मिलना चाहिए, उसके लिए कौनसा मीडिया फॉर्मेट बेहतर है?

लोकतंत्र में जनजातीयता–कबीलेवाद (Tribalism) का स्थान नहीं होता है। देख कर लगता है की एल्गोरिदम आधारित वैकल्पिक मीडिया जनजातीयता–काबिलेवाद (Tribalism) को बढ़ावा दे रहा है और जनसंचार और उसकी जो परिकल्पना है जिसका लक्ष्य है एक विस्तृत और परिपक्वव समाज का विकास। क्या वह संकुचित हो रहा है? क्या पत्रकारिता का जो ढाँचा इन संस्थागत समाचार मीडिया के साथ खड़ा हुआ था वह गिर रहा है? क्या होगा अगर यह सब बर्बाद हो जाएगा और एल्गोरिदम आधारित वैकल्पिक मीडिया आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस तकनीक के साथ मिलकर जनसंचार के या कहें अर्थपूर्ण संचार (Meaningful Communication) को ही खत्म कर देगा।

शोध विधि :

हर नई तकनीक समाज में परिवर्तन लाती है। इसी प्रकार जनसंचार की हर नई तकनीक ने पुरानी तकनीकों को परिवर्तित होने के लिए बाध्य किया है और समाज को भी नया वातावरण उपलब्ध करवाया। जिसका प्रभाव समाज पर हुआ और सूचना को नए नए आयाम मिले। एल्गोरिदम आधारित वैकल्पिक मीडिया जो आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के साथ मिलकर इतिहास में पहली बार एक ऐसे सूचना और संचार के तंत्र को निर्मित कर रहा है जिसमें मानव के हाथ से सारा नियंत्रण निकलकर मशीन के हाथ में चले जाने का खतरा बना हुआ है। यूवल नोअ हरारी ने अपनी किताब (नेक्सस) में सूचना के इतिहास और उसके बदलते आयामों पर चर्चा की है और नए खतरों के बारे में भी विस्तार से बताया है। मार्शल मैकलुहान ने (मीडिया प्रभावों के चतुर्भुज) सूचना और संचार तकनीकों से समाज पर पड़ने वाले प्रभावों की जाँच के लिए एक चार भाग वाली संरचना का उपयोग किया है

संवर्धनः

यह माध्यम किस मानवीय क्षमता या गतिविधि को बढ़ाता है, तेज करता है या बेहतर बनाता है? जैसे– स्मार्टफोन ने संचार की गति को बढ़ाया।

अप्रचलनः

यह माध्यम किन पुरानी तकनीकों या आदतों को बेकार या कम महत्वपूर्ण बना देता है? (जैसे– ईमेल ने पत्र लेखन को अप्रचलित कर दिया)

पुनर्प्राप्तिः

यह माध्यम अतीत के किन तत्वों को वापस लाता है, जो पहले खो गए थे या हाशिए पर चले गए थे।

उलटफेरः

जब इस माध्यम को इसकी सीमा (अति) तक ले जाया जाता है, तो यह किसमें बदल जाता है? (जैसे– इंटरनेट से बहुत अधिक जुड़ाव अंततः अलगाव में बदल सकता है)।

एल्गोरिदम आधारित वैकल्पिक मीडिया से ना केवल संस्थागत मीडिया को खतरा है बल्कि पत्रकारिता और सूचना सम्प्रेषण के जो आदर्श एक लोकतंत्र में होने चाहिए उनके लिए भी एक चुनौती सामने नजर आ रही है।

इस शोध पत्र में **मार्शल मैकलुहान** के **मीडिया प्रभावों के चतुर्भुज** के आधार पर द्वितीयक आंकड़ों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। लोकतंत्र और उसमें संस्थागत समाचार मीडिया और एल्गोरिदम आधारित वैकल्पिक मीडिया के बारे में गुणात्मक विश्लेषण शोधकर्ताओं और विशेषज्ञों द्वारा न्यू मीडिया और उसके प्रभावों को लेकर जो शोध किए गए और जो परिवर्तन बताए गए हैं, उनके आधार पर किया गया है। इसके साथ ही इन दोनों तरह के मीडिया की संरचना और उनकी कार्यप्रणाली का विश्लेषण लोकतंत्र और उसके नागरिकों की जरूरतों के आधार पर किया है। मार्शल मैकलुहान के (मीडिया प्रभावों के चतुर्भुज) के आखिरी आयाम ''उलटफेर'' को यहाँ इन दोनों मीडिया के परिप्रेक्ष्य में देखा गया है।स्वस्थ लोकतंत्रों में अभी धीरे–धीरे पत्रकारिता के ध्वस्त होते आदर्शों और उसमें एल्गोरिदम आधारित वैकल्पिक मीडिया की भूमिका को लेकर बातें शुरू हुई हैं। यह एक संक्रमण काल है जिसमें संस्थागत समाचार मीडिया दर्शकों के लिए संघर्ष कर रहा है। विज्ञापन एल्गोरिदम आधारित वैकल्पिक मीडिया की तरफ जा रहे हैं। एल्गोरिदम आधारित वैकल्पिक मीडिया के पास पत्रकारिता का अपना कोई तंत्र नहीं है। इस मीडिया पर कोई संवैधानिक और नैतिक दबाव नहीं है। इनके अपने कोई दिशा निर्देश नहीं हैं, अलग–अलग देश अपने हिसाब से इन प्लेटफॉर्म को लेकर दिशा निर्देश बना रहे हैं। लेकिन सूचना और उसके प्रसारण की लोकतांत्रिक व्यवस्था में जो आवश्यकता है व प्रकाशस्तंभ (Lighthouse) के रूप में संस्थागत समाचार मीडिया की जो भूमिका है, वो इन प्लेटफॉर्म से पूरी होगी इस बात को लेकर तरह–तरह की बातें हो रही हैं।

विश्लेषण :

संस्थागत बनाम एल्गोरिदमअ आधारित मीडिया की मूलभूत संरचना : जनसंचार एक व्यापक विषय है जिसमें कई तरह के मीडिया एक साथ किसी लोकतंत्र में अपनी–अपनी भूमिका निभाते हैं। समाचार पत्र, रेडियो, टेलीविजन, और इंटरनेट आधारित सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक बड़े और विविध जन समूह की सूचना और संचार की अलग–अलग जरूरतों को पूरा करते हैं। मीडिया में विविधता और बहुलता का होना मीडिया को प्रमाणिकता प्रदान करता है। उपरोक्त मीडिया के हर प्रकार की अपनी एक अलग संरचना है जिसमें कुछ विशेष गुण है जो उसे दूसरों से अलग करते है। सूचना का समाचार के रूप में प्रस्तुतीकरण करना एक प्रक्रिया है जिसमें एक संस्था में कई तरह के पेशेवर लोग कई स्तरों पर सूचना इकट्ठा करने से लेकर दर्शकों व पाठकों तक समाचार पहुँचाते है। एक संस्था जब सूचना और न्यूज का कार्य करती है तो वह कुछ नियमों और शिष्टाचारों का पालन करती है। सूचना से न्यूज बनने तक के सफर में कई स्तरों पर फैक्ट्स की निगरानी और उनकी वैधता की जाँच होती है। समाचार पत्र में न्यूज को लिखते हुए शब्दों के चयन से लेकर फैक्ट्स की प्रस्तुति इस प्रकार की जाती है कि लोगों की एक समझ बन सके। ऐसे ही टेलिविजन न्यूज में भी एक पूरा संस्थागत ढाँचा न्यूज तैयार करता है। इन पर सरकारी नियमों और आपसी प्रतिस्पर्धा का दबाव भी रहता है। इनका राष्ट्रीय स्तर से लेकर लोकल स्तर तक एक नेटवर्क बना होता है।

मीडिया शिक्षा के संस्थानों में समाचारपत्रों और टेलिविजन न्यूज के सेट अप और उसमें काम करने वाले पदों की कार्यप्रणाली को पढ़ाया जाता है। एल्गोरिदम आधारित वैकल्पिक मीडिया में इस प्रकार का संस्थागत ढाँचा न्यूज तैयार नहीं करता है।इसके साथ ही दूसरा पहलू है प्रसारण और वितरण का। सामूहिक पठन (Collective reading) और सामूहिक दर्शकत्व (Collective viewing) की एक व्यवस्था संस्थागत समाचार मीडिया ने खड़ी की। एक साथ बड़े जनसमूह और बड़े भू–भाग तक एक व्यवस्थित कार्यप्रणाली से बनायी गई न्यूज को प्रसारित कर लोकतंत्र में रोजेरीयन तर्क (Rogerian

Argument) या कहें समन्वयात्मक तर्क पद्धति को बढ़ावा दिया। एल्गोरिदम आधारित वैकल्पिक मीडिया लोगों को एक संज्ञानात्मक बुलबुले में कैद कर रहा है जहाँ व्यक्ति वही जानकारी, विचार और खबरें देखता –सुनता है जो उसके पहले से बने विचारों से मेल खाती हो। इनका प्रसारण का तरीका संस्थागत समाचार मीडिया से बिल्कुल भिन्न है तो कैसे एल्गोरिदम आधारित वैकल्पिक मीडिया संस्थागत समाचार मीडिया की भूमिका ले सकता है।

डार्क अलायंस मामला और ऑनलाइन पत्रकारिता की सीमाएं : प्रोफेसर जो बाडौएल (1951) रेडबौड यूनिवर्सिटी निजमेजेन में पत्रकारिता और मीडिया के एमेरिटस प्रोफेसर हैं। उनके 2002 के अध्ययन में उन्होंने ऑनलाइन पत्रकारिता के चार ऐसे गुणों की पहचान की जो उसे संस्थागत पारम्परिक मीडिया से अलग करते है। परस्पर क्रियाशीलता (Interactivity), हाइपरटेक्स्टुअलिटी (Hypertextuality), बहु–माध्यमिकता (Multimodality), असमकालिकता (Asynchronicity)। प्रोफेसर जो बाडौएल अपनी इसी शोध रिपोर्ट में इस बात पर जोर देते हैं कि अगर इन गुणों से ऑनलाइन पत्रकारिता के स्तर को बढ़ाना है तो उसके लिए पत्रकारिता के संस्थागत ढाँचे की आवश्यकता है।अगस्त 1996 में, सैन जोस (कैलिफोर्निया) के एक क्षेत्रीय समाचार पत्र, मर्करी न्यूज ने अमेरिका में क्रैक कोकीन के प्रसार और मध्य अमेरिका में सीआईए समर्थित कॉन्ट्रा विद्रोहियों के लिए धन जुटाने के बीच संबंधों की अपनी एक साल लंबी जांच के परिणाम प्रकाशित किए। 'डार्क अलायंसः द स्टोरी बिहाइंड द क्रैक एक्सप्लोजन' पहली खोजी रिपोर्टें थी जिसने मुख्य रूप से इंटरनेट के माध्यम से राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्धि प्राप्त की।

जर्नल ऑफ कम्युनिकेशन में प्रकाशित मैरी ई. मैककॉय के 2001 के लेख, ''डार्क अलायंसः इंटरनेट के युग में समाचार सुधार (News Repair) और संस्थागत अधिकार'' में सैन जोस मर्करी न्यूज की ''डार्क एलायंस'' श्रृंखला का विश्लेषण किया गया। इस घटना में संस्थागत समाचार मीडिया ने पहली बार पेशेवर पत्रकारिता और ऑनलाइन सूचना प्रसारण में सीमाएँ स्थापित करने का प्रयास किया। इसमें बताया गया कि पत्रकारिता सिर्फ आंकड़ों का प्रसारण नहीं है। किसी सूचना या व्यक्ति की विश्वसनीयता सिर्फ ऑनलाइन दिखाई देने से नहीं, बल्कि स्थापित मीडिया संस्थानों से मिलती है। पारंपरिक पत्रकारिता के व्यावसायिक / पेशेवर मानक और नियम को लेकर पहली बार चिंता जाहिर की गई और संस्थागत समाचार मीडिया अपनी विश्वसनीयता को कैसे बनाए रखते और उसकी रक्षा करते हैं, इसको लेकर पहली बार चर्चा शुरू हुई।

पत्रकारिता के मानक (वस्तुनिष्ठता, सटीकता, प्रासंगिकता) और कम्युनिटी नोट्स की सीमाएः पत्रकारिता और पत्रकार की क्या भूमिका एक लोकतंत्र में होनी चाहिए इसको लेकर काफी मतभेद है। पारंपरिक चौथे स्तम्भ की अवधारणा जिसमें पत्रकारिता जनता की आवाज उठाती है, सरकार की रचनात्मक आलोचना करती है, नीतियों पर बहस करती है, और निगरानी रखती है, पर ही सहमति बनती है। पत्रकार के लिए भी 'वस्तुनिष्ठता' (Objectivity) को सबसे अहम् पेशेवर वैल्यू माना जाता है। 'वस्तुनिष्ठता' (Objectivity) को प्राथमिकता देना मीडिया व्यवसाय की व्यावसायिक तर्क–प्रणाली से भी मेल खाता है, क्योंकि पक्षपात (Partisanship) आमतौर पर दर्शकों के दायरे को सीमित कर देता है।

संस्थागत समाचार मीडिया ने ऐसे दिशानिर्देश विकसित किए है जो रिपोर्टिंग पर व्यक्तिगत विश्वासों के प्रभाव को सीमित करने के लिए जरूरी है। **तथ्यात्मकता एक दूसरा** पहलू है जिसे संस्थागत समाचार मीडिया ने काफी मेहनत से विकसित किया है। इसके दो आयाम हैं सटीकता और प्रासंगिकता। सटीकता से अभिप्राय है कि ना तो तथ्यों से भ्रमित करना और ना ही तथ्यों को छिपाना या दबाना। प्रासंगिकता को कार्ले नॉर्डेनस्ट्रेंग (1983), जो फिनलैंड के प्रसिद्ध मीडिया और पत्रकारिता के विद्वान (Media Scholar) हैं, ने सूचना के चयन की प्रक्रिया से जोड़ा जिसमें स्पष्ट व सुसंगत सिद्धांतों के आधार पर दर्शकों के लिए जरूरी सूचनाओं का चयन किया जाना चाहिए। दर्शकों के लिए लोकतंत्र में जरूरी सूचनाएँ क्या हैं, इसको लेकर संस्थागत समाचार मीडिया ने एक लम्बे समय में सुसंगत सिद्धांतों का निर्माण किया।इसके बाद बात आती है कि किसी समाचार में उपयोगी जानकारी देने की कितनी क्षमता है। इसे अक्सर सूचनात्मकता (Informativeness) कहा जाता है।

किसी समाचार रिपोर्ट की सूचनात्मकता इस बात पर निर्भर करती है कि वह कितनी उपयोगी जानकारी प्रदान करती है। सूचनाओं का होना और फिर सूचनाओं से दर्शकों के लिए उपयोगी जानकारी निकाल कर प्रस्तुत करना इसके लिए संस्थागत समाचार मीडिया की **संगठनात्मक संरचना** और पत्रकार व संपादक की पेशेवर निपुणता सबसे अहम् है। सूचना की परिभाषा और उसकी गुणात्मकता और उसकी प्रासंगिकता ऐसे विषयों में ज्यादा महत्व रखती जो सीधे नागरिकों के अधिकारों और उनके जीवन से जुड़ी हो।

लोकतंत्र में इन संस्थाओं के पास आत्म संसोधन तंत्र भी होता है। सूचना और सत्य एक नहीं हैं । सूचना को जब संस्थागत समाचार मीडिया कई स्तरों पर जाँच पड़ताल के बाद न्यूज में परिवर्तित करता है तब जाकर उसमें सत्यता और प्रमाणिकता आती है। यहाँ एल्गोरिदम आधारित वैकल्पिक मीडिया और पत्रकारिता के मूल्य और आदर्श एक दूसरे के साथ संरेखित (Align) दिखायी नहीं देते। ऐसा लगता है कि पत्रकारिता ने जिस मीडिया के समय अपने आप को विकसित किया, अपने मूल्य और नियम बनाए, उन्हें एल्गोरिदम आधारित वैकल्पिक मीडिया में लागू कर पाना एक चुनौती है। समाचार को जल्दी से जल्दी लोगों तक पहुँचाना भी जरूरी है, लोगों की समस्याओं को ज्यादा से ज्यादा संख्या में शामिल करना भी जरूरी है, ज्यादा से ज्यादा लोगों को आवाज देना भी जरूरी है, लेकिन इन सब जरूरी बातों के साथ यह भी जरूरी है कि बहुआयामी लोकतंत्र में हर धर्म, जाति और अन्य विविधताओं के होते हुए भी नागरिकों के साथ लोकतंत्र में जरूरी मुद्दों पर एक साथ सार्थक संचार हो सके, जहां सूचनाएँ नागरिकों को भ्रमित ना करें। जीवन के जरूरी विषयों जैसे नागरिक अधिकार, सुरक्षा, स्वास्थ्य, शिक्षा, महंगाई, पर्यावरण, राजनीतिक जवाबदेही और पारदर्शिता पर सूचनाएँ और चर्चाएँ पत्रकारिता की प्रामाणिक व्यवस्थाओं के आधार पर होनी चाहिए।

लोकतंत्र की जरूरतें : लोकतंत्र में नागरिकों के पास सूचनाओं के अलग अलग स्रोत होने चाहिए ताकि कोई उन्हें मूर्ख ना बना सकें। इसलिए मीडिया की बहुलता और विविधता को सुनिश्चित करने के लिए प्रयास किए गए। मीडिया में बहुलता और विविधता के साथ ही लोकतंत्र में सूचना और समाचार के विषयों की एकरूपता और उन्हें संकलित और प्रेषित करने की व्यवस्थाएं भी प्रामाणिक और निष्पक्ष होनी चाहिए। खंडित मीडिया पारिस्थितिकी तंत्र– जिसमें पक्षपातपूर्ण उदाहरणात्मक रिपोर्टिंग, सोशल मीडिया के छोटे छोटे क्लिप्स और अंतहीन विशेषज्ञ विश्लेषणों का बोझ शामिल है – ज्ञान का एक भ्रम पैदा करता है, जबकि यह जनता को वास्तविक अनुभवात्मक समझ प्रदान नहीं करता। इसके साथ ही 'व्हाटअबाउटरी' (Whataboutery) जो एक तर्क–विधि (Argument technique) है जिसमें कोई व्यक्ति किसी मुद्दे या आरोप का सीधे जवाब देने के बजाय ध्यान भटकाने के लिए कहता है। जब किसी सवाल का सही जवाब देने की जगह, दूसरा व्यक्ति किसी और मुद्दे को उठाकर बहस को घुमा देता है, तो उसे 'व्हाटअबाउटरी' कहते हैं। एल्गोरिदम आधारित वैकल्पिक मीडिया ने 'व्हाटअबाउटरी को आसान बना दिया है और जिसके कारण लोकतंत्र में जरूरी मुद्दों पर सहमति बनाना और समझ बनाना मुश्किल होता जा रहा है। एल्गोरिदम आधारित वैकल्पिक मीडिया के जो गुण जैसे कि सामग्री की असीमित विविधता, दर्शकों तक पहुँच का व्यापक दायरा, और संचार का वैश्विक स्वरूप, को लेकर लिहा लिवरों (Leah Lievrouw) (2004) ने अपने एक लेख में यह बताया है कि कुछ समय बाद 'नए मीडिया' धीरे–धीरे 'मुख्यधारा' (Mainstream) में शामिल हो जाएँगे, नियमित (Routinized) बन जाएँगे, और यहाँ तक कि 'सामान्य' (Banalized) भी हो जाएँगे। ऐसा होता नजर भी आ रहा है। एल्गोरिदम आधारित वैकल्पिक मीडिया के मालिक अलग अलग देशों की सरकारों के साथ मिलकर अपने मीडिया प्लेटफॉर्म पर उन सभी पाबंदियों और दबावों को लागू कर रहे है जिन्हें लेकर कभी संस्थागत समाचार मीडिया की आलोचना की जाती थी। लेकिन इसके कारण पत्रकारिता का पूरा ढाँचा समाप्त हो रहा है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म मेटा और एक्स (X) ने अपनी फैक्ट चेक यूनिट को बंद कर दिया और ये जिम्मेदारी दर्शकों पर डाल दिया के वो किसी सूचना के गलत होने पर उसके नीचे कम्युनिटी नोट्स डाल सकते हैं। भारत जैसे देश में जहां साक्षरता दर इतनी कम है, उनकी मीडिया साक्षरता क्या इस स्तर की होगी कि वे कम्युनिटी नोट्स के प्रावधान को समझ सकें और न्यूज और प्रोपगैंडा में भेद कर सकें।

टॉम गोल्डस्टाइन (Tom Goldstein), जो ओम् प्रकाश जिंदल यूनिवर्सिटी में पत्रकारिता स्कूल के डीन है, ने अपने इंडियन एक्सप्रेस के लेख (Washington Post Layoffs: We will know a lot less about the world) में बताया

है कि कैसे एक संस्थागत समाचार पत्र विकसित हुआ, कितने विभाग वहाँ काम करते थे। इस लेख को पढ़ते हुए आप को संस्थागत समाचार मीडिया की भूमिका समझ आती है। इतने पुराने समाचार पत्र में बड़े स्तर पर लोगों को निकालने का मूल कारण यही है कि एल्गोरिदम आधारित वैकल्पिक मीडिया ने संस्थागत मीडिया की आर्थिक शक्ति (विज्ञापन) को छीन लिया है। विज्ञापन आता है दर्शकों की संख्या से जो अब पूरी तरह एल्गोरिदम आधारित वैकल्पिक मीडिया पर जा चुके हैं।

निष्कर्ष :

एक तरफ दर्शक कम हो रहे हैं, जिस कारण संस्थागत मीडिया में लोगों की नौकरियां जा रही हैं, लोगों की कमी के कारण पत्रकारिता नहीं हो पा रही है, वहीं एल्गोरिदम आधारित वैकल्पिक मीडिया न्यूज और सूचनाओं की परिभाषा बदल रहा है। साथ ही लोगों की मान्यताओं और भ्रम को दूर करने की जगह एल्गोरिदम से उन्हें मजबूत कर रहा है। लोकतंत्र में होने वाली सार्थक चर्चाएँ एक प्रकार के युद्ध में बदल रही हैं।

मार्शल मैक लुहान ने अपने शोध में पाया कि माध्यम ही संदेश है, लेकिन ऐसा होना ठीक नहीं है । उन्होंने अपने शोध में ऐसा पाया कि माध्यम ज्यादा शक्तिशाली हो गया है, लेकिन क्या ऐसा होना चाहिए? अधिकतर यूट्यूब पत्रकार माध्यम के प्रभाव के कारण पत्रकारिता के सिद्धांतों को दरकिनार कर रहे हैं। लोकतंत्र में **सामूहिक उत्तरदायित्व** सरकार का भी होता है लेकिन उससे पहले लोगों का होता है। जनता अपना उत्तरदायित्व सही से निभा पाए इसके लिए उसके पास सूचनाओं और समाचारों का पहुँचना जरूरी है। चर्चाएँ करना जरूरी है, सही मुद्दों की पहचान जरूरी है। इन सब कार्यों में संस्थागत समाचार मीडिया ने अपने आप को तैयार किया और पत्रकारिता को भी एक मानक के अनुसार विकसित किया। एल्गोरिदम आधारित वैकल्पिक मीडिया आज पत्रकारिता को अलग तरह से परिभाषित कर रहा है। जहां **सामूहिक उत्तरदायित्व** का कोई स्थान नहीं है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

Bozdag, E., & van den Hoven, J. (2015). Breaking the filter bubble: Democracy and design. *Ethics and Information Technology, 17*, 249–265. https://doi.org/10.1007/s10676-015-9380-y

McCoy, M. E. (2001). Dark alliance: News repair and institutional authority in the age of the Internet. *Journal of Communication, 51*(1), 164–193. https://doi.org/10.1111/j.1460-2466.2001.tb02877.x

McLuhan, M. (1964). *Understanding media: The extensions of man*. McGraw-Hill.

Pariser, E. (2011). *The filter bubble: What the Internet is hiding from you*. Penguin Press.

Tufekci, Z. (2017). *Twitter and tear gas: The power and fragility of networked protest*. Yale University Press.

Lievrouw, L. A. (2004). What's changed about new media? Introduction to the fifth anniversary edition. *New Media & Society, 6*(1), 1–4. https://doi.org/10.1177/1461444804039918

Nielsen, R. K. (2012). *Ten years that changed the news: The transformation of the news ecosystem and the role of digital journalism*. Reuters Institute for the Study of Journalism, University of Oxford.

Ward, S. J. A. (2010). *Ethics for digital journalists: Emerging challenges*. Center for International Media Ethics.

Singer, J. B. (2005). The existential function of journalism. *Journalism Studies, 6*(1), 1–11. https://doi.org/10.1080/1461670052000320164

Deuze, M. (2005). What is journalism? Professional identity and ideology of journalists reconsidered. *Journalism, 6*(4), 442–464. https://doi.org/10.1177/1464884905056815

Carlson, M. (2017). Journalistic authority: Legitimating news in the digital era. *Columbia University Press*.

Couldry, N., & Hepp, A. (2017). *The mediated construction of reality*. Polity Press.

Pariser, E. (2012). *The filter bubble: How the new personalized web is changing what we read and how we think*. Penguin Books.